डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट
खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–11 अप्रैल, 2020)

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा में जायसी का स्थान

सूफी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा संस्कृत साहित्य के पूर्व से चली आ रही है। संस्कृत साहित्य से पूर्व की सूफी काव्यधारा में हिन्दू–मुस्लिम दोनों तरह के कवि मौजूद थे। जबकि भक्तिकाल में जिस सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा का प्रवाह मिलता है, उसमें प्रायः मुसलमान सूफी कवि ही हैं। दोनों ही काल के सूफी कवियों की विषेषता लगभग समान थी। दोनों ही हिन्दू घरों की कहानियों के माध्यम से अपने धर्म या मजहब का प्रचार–प्रसार कर रहे थे। उनके काव्य रचना के केन्द्र में प्रेम तत्व की प्रधानता थी। प्रेम और सौंदर्य के माध्यम से ही वे ईष्वर का साक्षात करते थे। संस्कृत साहित्य में 'यम–यमी', 'पुरुरवा–उर्वषी', 'कच–देवयानी', 'दुष्यंत–षकुन्तला' आदि की प्रेम कथाएं आम लोगों के बीच प्रचलित थीं। अपभ्रंष काव्यधारा में भी 'संदेष रासक', 'भविसयत्तकहा' आदि अपभ्रंष रचनाएं मूलतः प्रेम पर ही आधारित है। जब हम भक्तियुग की बात करते हैं तो भक्तियुग के हिन्दू कवियों के द्वारा 'रूक्मिनी मंगल', 'माधवानलकामकन्दला', 'बैलिकिसन रुक्मणि–री', 'ढ़ोलामारूरा दूहा' आदि प्रेमाख्यानक काव्य रचनाएं हैं। इनमें प्रेमकथा का षुद्ध रूप है, जिससे परमात्म भक्ति का संदेष या संकेत कतई नहीं मिलता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि भक्तिकालीन सूफी कवियों में प्रेम तत्व की प्रधानता मूलतः परमात्मा के प्रति प्रेम–भाव का ही प्रचार–प्रसार है। इनमें जो लौकिक प्रेम कथा का आधार है, वह आत्मा और परमात्मा के प्रेम, परम प्रिय के मिलन या साक्षात्कार में विघ्न–बाधाओं के साथ संघर्ष का निरूपण है।

संत कवियों की तरह भक्तिकालीन सूफी कवियों ने हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों की एकता को बनाये रखने का प्रयास किया है। इनकी प्रमुख विषेषताओं में एक था धर्म के प्रति उदार दृष्टिकोण। ये सूफी कवि कट्टर इस्लाम धर्म को मानने वाले न होकर उदार दृष्टिकोण वाले रहस्यवादी संत थे। इस्लाम धर्म की कुछ बातों को लेकर इन्होंने हिन्दू समाज में प्रचलित प्रेम कहानियों के माध्यम से हिन्दू और मुसलमानों के बीच प्रेम–भावना का खुलकर प्रचार किया। सूफी साहित्य में अभिव्यक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि वे इस्लाम और हिन्दू दोनों धर्मों के लोक प्रचलित व्यवहारों का प्रयोग करते रहे हैं। इन कवियों ने प्रतीकों का प्रयोग खुलकर किया है। प्रतीक के माध्यम से अनेक बातें जो निर्गुणोंपासक संतों द्वारा साधना के रूप में कही गयी हैं, उन बातों को सूफी संत कवियों ने कथा कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जैसे, ईष्वर के अलौकिक रूप का वर्णन, गुरु के महत्त्व का निरूपण, निर्गुण निराकार परमात्मा के प्रति आकर्षण, विरह की अनुभूति का चित्रण, साधना की कठोरता, मन की वृत्तियों तथा माया–मोह के साथ संघर्ष, काया–षुद्धि और अत्यंत प्रिय परमात्मा से मिलन आदि बातें संत काव्य और सूफी काव्य में समान रूप से मिलती है। नाथ संप्रदाय की हठयोग साधना में सात्विक भोजन, माया–मोह से मुक्ति और काया–षुद्धि आदि को देखने से पता चलता है कि सूफी संत कवि कमोवेष नाथ संप्रदाय से प्रभावित थे। प्रेम की भावना

सूफी कवियों की निजता को प्रदर्षित करती है। सूफी कवियों द्वारा ब्रह्म या ईष्वर की उपासना में ब्रह्म या ईष्वर को स्त्री के रूप में और जीव या साधक को पुरुष प्रेमी के रूप में माना गया है।

सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा में सर्वाधिक प्रसिद्ध और समर्थ कवि मलिक मुहम्मद जायसी थे। इनका जन्म 1492 ई0 में और निधन 1552 ई0 में। उनकी प्राप्त चार मुख्य रचनाएं हैं– 1. अखरावट 2. आखिरी कलाम 3. चित्ररेखा और 4. पद्मावत। इनमें पहली दो रचानाएं इस्लाम धर्म से संबंधित है और अंतिम दो रचनाएं प्रेमाख्यान हैं। जायसी की प्रसिद्धि का मूल आधार 'पद्मावत' है। 'पद्मावत' में चित्तौर (राजास्थान) के राजा रत्नसेन और रानी पद्मावती की कथा है। उस समय दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन था। जायसी ने 'पद्मावत' के कथानक–निर्माण में ऐतिहासिक घटनाओं और साहित्यिक कल्पनाओं का संयोजन बेहद रोचक और अद्भुत रूप में किया है। कथानक के बीच में हठयोग साधना, त्याग, तपस्या, गुरु की महिमा, प्रेम का महत्त्व आदि बातों का प्रभावषाली रूप में चित्रण मिलता है।

पद्मावत की संक्षिप्त कथावस्तु :– रत्नसेन चित्तौर के राजा थे और उनकी पत्नी रानी नागमती थी। इन दोनों के अलावे सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री पद्मावती थी। पद्मावती का रूप–सौंदर्य अद्भुत था। उसके पास एक सुआ (सुग्गा या तोता) था। रानी के विवाहयोग्य होने पर राजा–रानी चिन्तित थे। इन दोनों की चिन्ता से तोता भी चिन्तित था। एक दिन तोता का पिंजरा खुला रह गया और वह उड़ गया। उसे एक ब्राह्मण ने पकड़ा और चित्तौड़ के एक बंजारे के हाथ बेच दिया। तोता के गुणों और विद्वता को सुनकर राजा प्रभावित हुआ और बंजारे को तोता को तोता लेकर बुलवाया। सुग्गे ने राजा के सामने पद्मावती के प्रभावषाली रूप–सौंदर्य का नख–षिख वर्णन किया। अभिभूत होकर रत्नसेन ने सुग्गे से पद्मावती को हासिल करने का उपाय पूछा। सुग्गे ने योग साधना के द्वारा सिंहलगढ़ राजमहल में प्रवेष का मार्ग बताया। सुग्गा को छोड़ दिया गया, जिससे वह पुनः पद्मावती के पास पहुंच गया। राजा रत्नसेन नागमति को छोड़ वेष बदलकर पद्मावती के विरह में रास्ते के समुद्रों व संघर्षों को पार करता हुआ सिंहल द्वीप गढ़ के प्रवेष द्वार पर पहुंचकर पकड़ा गया। पद्मावती से मिलने की बेचैनी से राजा ने यह समझा कि यह राजकुमार है और पद्मावती से बेहद प्रेम करता है, दोनों की षादी कर दी। रत्नसेन पद्मावती के साथ चित्तौर लौटा। इधर नागमती रत्नसेन के विरह में व्याकुल रहने लगी। तभी दिल्ली के बादषाह अलाउद्दीन के कानों में पद्मावती के रूप–सौंदर्य की चर्चा को सुनकर सुल्तान अलाउद्दीन ने चित्तौर पर चढ़ाई कर दी। आठ वर्षों तक वह चित्तौर को घेर कर जमा हुआ था। अंत में छल से उसने पद्मावती के दर्षन करा देने पर लौट जाने की षर्त रत्नसेन के समक्ष रखी। राजा रत्नसेन ने उसकी षर्त मान कर अलाउद्दीन को महल में बुलाया। एक कमरे में दोनों षतरंज खेलने लगे और सामने एक दर्पण रख दिया गया। पद्मावती जब महल के झरोखे पर आई तो दर्पण में पद्मावती का प्रतिबिम्ब देखकर अलाउद्दीन हतप्रभ हो मूर्च्छित हो गया। वह वापस लौटने लगा तो रत्नसेन उसे बाहर छोड़ने आया, तभी अलाउद्दीन ने छल से अपने सिपाहियों द्वारा रत्नसेन को बंदी बनाकर दिल्ली ले आया।

पद्मावती इस सूचना से व्याकुल हुई, किन्तु उसने अपने योद्धा सेनापति गोरा और बादल के माध्यम से अलाउद्दीन को यह सूचना दी कि वह खुद उसकी षरण में आयेगी तो वह रत्नसेन को छोड़ देगा। इस षर्त के मुताबिक पद्मावती हाजारों डोलों के साथ पूरे लाव–लष्कर–षस्त्रों से लैस होकर दिल्ली पहुंची। दिल्ली पहुंचने के साथ पद्मावती ने अलाउद्दीन के पास संदेष भेजा कि अब वह उसके पास सदा के लिए आ गई है, इसलिए उसे एक बार राजा से भेंट कर लेने दिया जाय।

यह षर्त मान ली गयी। राजा को वापस भेजते हुग द्वार पर पद्मावती से एक बार मिलने का आदेष दिया गया। मिलने के बहाने से पद्मावती राजा के साथ घोड़े पर सवार होकर चित्तौर की ओर भाग खड़े हुए और डोलों में बैठी सेना अलाउद्दीन की सेना से युद्ध करने लगे। चित्तौर आने पर रत्नसेन किसी राज्य के राजा से युद्ध करने गया और मारा गया। उधर अलाउद्दीन की सेना से उसके योद्धा सेनापति गोरा और बादल भी मारा गया। अलाउद्दीन ने पद्मावती को पाने की ललक से चित्तौर पर पुनः आक्रमण कर दिया। यह सब सुनकर राजमहल में अलाउद्दीन के आने से पहले ही रानी पद्मावती ने एक चिता बनाई और अपनी संपूर्ण सखियों के साथ जलकर भस्म हो गयी। पद्मावती के अपूर्व रूप–सौंदर्य को पाने के उन्माद में जब अलाउद्दीन ने महल में प्रवेष किया तो राख के ढ़ेर को देखकर खिन्न हो गया। उसकी खिन्नता और विरक्ति का वर्णन करते हुए जायसी ने लिखा है–

लीन्ह उठाय छार भरी मूठी।
दीन्ह उड़ाय पिरथमी झूठी।।

अपने कथ्य के संदेष में जायसी ने पद्मावत महाकाव्य में अन्योक्ति को अपना माध्यम बनाया और उसके माध्यम से उन्होंने आध्यात्मिक साधना, प्रेम के मर्म, गुरु (सुग्गा) के महत्त्व और माया महाठगिनी की सूक्ष्मता को दर्षाया है :–

हौं यही अर्थ पंडितन बूझा। कहा कि हम किहु और न सूझा।
तन चितउर मन राजा किन्हा। हिय सिंहल, बद्धि पद्मिनी चीन्हा।।
गुरु सुआ जेहि पंथ देखावा। बिनु गुरु जगत को निर्गुन पावा।
नागमति यह दुनिया–धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बाँधा।
राघव दूत सोई सैतानू । माया अलाउद्दीन सुलतानू।
प्रेम कथा एहि भाँति विचारहु । बुझि लेहु जो बूझे पारहु ।।
तुरकी, अरबी, हिन्दुइ, भाषा जेती आहिं।
जेहिं महँ मारग प्रेमकर, सबैं सराहें ताहिं ।।

मलिक मुहम्मद जायसी गंभीर रहस्य भावना के सक्षम कवि थे। वे भावों अनुभूतियों और संवेदनाओं के कुषल षिल्पी थे। मानवीय जीवन के सत्य और अनुभव के चित्रण में उन्होंने प्रभावषाली बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग किया है। जीवन की क्षणभंगूरता को दर्षाते हुए उन्होंने लिखा है–

मुहम्मद जीवन जल भरम, रहंट घटी के रीति।
मरी जो आइ जल भरी, धरी जनम गा बीति।।

इसी तरह जायसी का वस्तु वर्णन सूक्ष्म, रोचक, गंभीर और उदात्त कल्पनाओं से युक्त है, जो स्वतः रहस्य भावना को उद्घाटित करता है। सिंहल द्वीप का वर्णन इसका ज्वलंत उदाहरण है। इसी पृष्ठभूमि में पद्मावती के रूप–सौंदर्य का वर्णन बेहद उत्कृष्ट और प्रभावषाली है। इसके चित्रण में अवधी भाषा की जैविकता, अलंकार और प्रतीकों की छटा भी देखने को मिलती है :–

सरवर तीर पद्मिनी आई । खोंपाा छोरि केस भुलकाई।।
ससि मुख, अंग मलयगिर बासा। नागिन झापि लीन्ह चहुँ पासा।।

'पद्मावत' महाकाव्य में पद्मावती और नागमती दोनों के वियोग का वर्णन मिलता है। परन्तु हृदय को तार–तार और उद्वेलित करने वाला नागमती का विरह अत्यंत प्रसिद्ध है। पद्मावती के विरह वर्णन का एक उदाहरण है–

पद्मावती बिनु कंत दुलेही। बिनु जल कंवल सूखि जषकेली।।

कुंवा ठार जल जयेस बिछोवा । डोल भरे नेनन्हि धनि रोवा।।

नागमती के चिर विरह वर्णन का एक मर्मस्पर्शी चित्र है –

फागुन पवन झकोरै बहा । चौगुन सोउ जाइ किमि सहा ।।
तन भा पियर पात जस भोरा। विरह उड़ाइ देइ झकझोरा।।
तरिवर झरै झरै बन ढाँखा । भइ अनपत्त फूल फर साखा।।
फाग करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि जिउ लाइ जीन्ह जस होरी।।
जो पै पियहिं जरत अस पावा । जरत मरत मोहि रोस न आवा।।
रातिहुं दिवस इहे मन मोरे । लगो निहोर कंत में तोरे ।।
यह तन जारों छार इकै, कहौं कि पवन उड़ाउ ।
मकु तेहि मारग होइ परौं, कंत धरै जहँ पाउ ।।

इस प्रकार इस प्रेमाख्यानक महाकाव्य में वर्णन सौंदर्य, भाषा सामर्थ्य, भाव–व्यंजना तथा जीवन के रहस्यों के संकेत और उसकी गहरी अनुभूति प्रेम के उत्कर्ष को छू कर चलती है। जीवन, समाज, धर्म, संस्कृति और राजनीतिक चेतना का यह पहला अनूठा महाकाव्य है, जिसमें भारतीय जन जीवन को प्रभावित करने का आध्यातिमक प्रयास बेहद महत्त्वपूर्ण है।

दिनांक :– 11/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**